वेदों की खुशबू ओ३म् वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 113	Year 22	Volume 09	OCTOBER 2022 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 150

विश्वाम अनाहुतिम

भूमे:गरीयसी माता,स्वर्गात उच्चतर:पिता।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गात अपि गरीयसी।।

अर्थ – भूमि से श्रेष्ठ माता है,
स्वर्ग से ऊंचे पिता हैं, माता और
मातृभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ हैं।

इसका अर्थ है कि हमारी भावना अयज्ञीय न हो अर्थात हम कृतघन न बनें खास कर उस परमेश्वर के प्रति जो हमें प्राण देता है, जीवन के सब साधन देकर पालता है और रक्षा करता है। उसका स्मरण करना न भूलें क्योंकि जो भी इस सृष्टि में दिखाई दे रहा है वह उसी की देने है। इसी तरह हम अपने देवों के प्रति भी कृतज्ञ रहें । कोन है वे देव ? दन देवों में सब से उपर माता पिता का स्थान है। क्या उस मां के उपकार को भूलाया जा सकता है, जिसने हमें 9 माह तक अपनी कोख में रखा और जन्म देते ही भरपूर प्यार दूलार दिया, अपने सुख का त्याग देकर हमें पाला। यही नहीं हमारे जीवन में बहुत से और भी ऐसे लोग आते हैं जो हमारे उदेश्य की पूर्ती में हमें सहायता करते हैं यही

Contact:
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रति निधी सभा
15, - हनुमान रोड
नई दिल्ली - 110001

POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2022-2024

नहीं जो कुछ भी हम बन पाते हैं उस में उनका योगदान भी होता है। हम उन के प्रती भी कृतज्ञ रहें।
उस ईश्वर की कृपा दृष्टि देखो जिसने हमें शरीर के साथ बुद्धि और विचार शक्ति भी प्रदान की। देखने वाली बात यह है कि यह बुद्धि और विचार शक्ति पशुओ के पास नहीं इसलिये मानव का यह कर्तव्य बनता है कि उस ईश्वर का सदैव धन्यबाद करता रहे और स्तुती करे ताकि अगला जन्म भी मानव का ही हो।
यदि हम किसी कारण वश ईश्वर का धन्यबाद न कर सकें तो कम कम से कम शिकायत न करें कि प्रभो तूने मेरे साथ बड़ा अन्याय किया, मझे मेरी योग्यता के अनुसार नहीं दिया, दूसरे को अधिक व मुझे कम दिया। ऐसी भावना मन में कुठारघात को ही उत्पन्न करती है और मानव का सब से अधिक नुकसान करती है। वह मन की शान्ती खो कर भटकता है और बाकी सब सखा साथियों से भी अपने सम्बन्ध खराब कर लेता है। ऐसी स्थिती में उसका जीवन पशु तुल्य बन जाता है। वह केवल शरीर से ही मानव नजर आता है वैसे पशु ही होता है। इस लिये हमें इस स्थिती से हर हालत में बचने का प्रयत्न करना चाहिये। यह तभी सम्भव है जब हम कृतज्ञ वने अर्थात धन्यबाद करने की आदत बनायें और खास कर ईश्वर की और माता पिता का। हम इस बात को न भूलें कि वह ईश्वर हमारा ही नहीं सब प्राणियों का पालनहार हैं। उसने सब के साथ न्यायकरना है क्योंकि ईश्वर पक्षपाती नहीं है। वह न्यायकारी है और हमें हमारे कर्मो के अनुसार सुनिश्चित करता है।

ईश्वर से शिकायत हम इस लिये नहीं कर सकते क्योंकि मानव अपनी खेती खुद बोता है। अच्छा बीज होगा तो अच्छा फल और खराब बीज होगा तो खराब फल। ईश्वर तो न्यायकारी होने के कारण अपनी न्याय व्यवस्था के अनुसार यह देखता है कि मानव आने कर्मों का उचित फल पाये। वह किसी के बुरे कर्मो को माफ नहीं करता। ऐसे में ईश्वर से शिकायत कैसी। उसका तो हमें धन्यबाद ही करना है कि उस कि न्यायव्यवस्था में कोई भी बड़ा से बड़ा अपराध कर बच नहीं सकता जो कि हमारे समाज की व्यवस्था को बिगड़ने नहीं देता और अच्छे ढंग से चलने में सहायक है। जरा सोचिऐ यदि ईश्वर की नयाय व्यवस्था न हो तो समाज में उथल पुथल मच जायेगी। जिस की लाठी उसी की भैंस वाला हाल हो जायेगा, व्यक्ति पाप करता हुआ डरेगा ही नहीं।। इस लिये ईश्वर से शिकायत नहीं धन्यबाद करना हमारा कर्तव्य है।

Our Politicians are corrupt because people see nothing wrong in adopting corrupt ways.

One great philosopher had said "People endorse a particular political philosophy do so because it suits their character". Two thousand years ago, Rishi Kautilya had said that the basis of ethics is economy, the basis of economy is state and the basis of state is civil society. If the civil society is not following ethics, the state can't do anything about it. If Jaisa Raja vaisi praja was true in monarchy, jaisi praja vaisa raja is hundred percent true in democracy. If our politicians are corrupt, cheats, spineless, self serving----- it is we who want to see them doing like this.

The day any MP or MLA is elected, he has a long queue of favour seekers at his residence. Our sole aim is to gain something out of them. Are we not making him to adopt corrupt means? If the brazenly corrupt politicians are winning elections, it is we who prefer them over the relatively honest ones.

As I see, majority amongst us are as corrupt, therefore in democratic set up, elections throw up corrupt elected leaders, it shouldn't come as a surprise. Punjab has come to a pass in last 30 years , where taking bribe or giving bribe for getting the things done has become an inescable ritual, nobody feels bad.

Wanted Bride

for a -----Hindu khatri, CA 28 years 6 feet fair colour, working in a reputed firm at Panchkula. Arya Samaj family and pure vegetarian. Living in Chandigarh Tricity will be preferred CONTACT-8146931916.

२३ वर्षिय कन्या के लिए उपयुक्त वर की आवश्यकता।

23 वर्षिय सूद, चंडिगढ़ निवासी हिमाचलीखतरी कन्या के लिए उपयुक्त वर की आवश्यकता। जन्म 28–01–1999 चंडिगढ़, सुन्दर,पढ़ाई इंजनियरिंग में डिगरी, आई टी सैक्टर में कार्यरत, 6 लाख साल का पैक्ज, आर्य समाज परिवार में पालन पोषण हुआ है। व्यवहार कुशल व घर के कार्य में निपुण। परिवार की जीवन शैली सादी व सादे ढंग से ही शादी करने में विश्वास करते है। परिवार पर ईश्वर की हर तरह से कृपा है। शाकाहारी, शराव व नशे से दूर 27 वर्ष आयु से कम युवक के माता पिता या निकट सम्बन्धी सम्पर्क करें। 9217970381, bsood0@gmail.com

शिमला का **SHARDA**

कामधेनु जल

गैस ऐसिडिटी व पेट के विकारों के लिए एक असरदार व अदभुत आयुर्वैदिक औषधि

एक बोतल कई महीनों चले । फोन : 0172-2662870, 9217970381

Marketing Off ... 231 Sector 45-A, Chandigarh 160047

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 150 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFC Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैक भेज दे।
या **Google Pay No. 9465680686** या **Paytm No. 9465680686**

The learned and wise feel the God within their hearts.

Bhartendu Sood

There is one hymn *"tam atmasham yeno pashyanti"* Its meaning is that the learned and wise feel the God within their hearts. Perceiving Him Omnipresent is the very basis of communing with God. Once we have accepted that we can feel Him in the interior of our hearts then there is no need to search Him on mountains, inside temples or in man made idols. This is precisely the fulcrum around which Maharishi Dayanand Saraswati's religious doctrine revolves.

What we need to do is to build up a temple of love with in our heart itself. Any seeker can meet the God within him only when he meets the basic requirements of observing *Yamas* and *Niyamas* by the practice of yoga. What are the requirements of *Yamas?*- (1) Not to bear malice to any living being and to have only love for all.(2) To be truthful and honest in dealings. (3) Celebacy- to practice self control and not to be overtaken by anger, arrogance, greed, lust and worldly attachments and to be humble.(4) nonpossessiveness (5) nonviolence These five constitute *Yamas and* take him to the first stage of *Upasana*. Next comes *Niyamas* which are five (1) He should internally purify himself by renouncing all passions and vicious desires. (2) He should work hard righteously but neither should rejoice in the success nor should be sorrowful if he fails. Let him renounce sloth and be always active like an ant. (3) His mind should remain stable and bad developments should not ruffle him (4) He should keep on acquiring true knowledge by studying the Vedas and other books of true knowledge. *Shastras say "ritegyananan mukti"* with out acquiring knowledge one can't get salvation. In Geeta Shri Krishana says," When the light so generated from the sacred fire of knowledge enters the heart, bad thoughts which give birth to bad acts

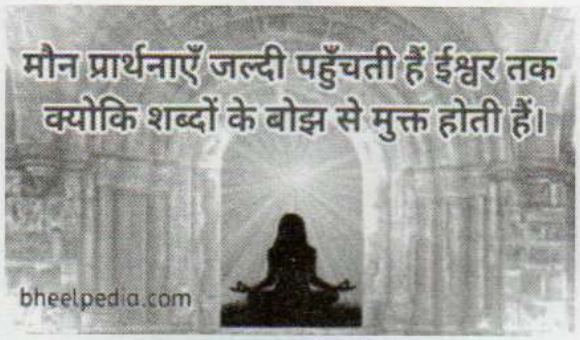

make an exit" (5) He should resign his soul to the will of God.

Passage to meeting of Atma with Parmatma is *Upasana*. When a man desires to engage in *Upasana*, let him resort to a solitary place which may have peaceful ambience. Relaxed, he should practice *Pranayama* (control of breath) restrain the senses from the pursuits of outward objects and steady his mind in one of the following places:- the navel, the heart, the throat, the eyes, the top of the head or the spine. Let him, then discriminate between his own soul and the Supreme Spirit, get absorbed in the contemplation of the latter and commune with Him. This stage is known as *Sanyami*. When a man follows these practices, his mind as well as soul becomes pure and imbued with righteousness. His knowledge and wisdom advance day by day, he advances spiritually and ultimately attains salvation.

On this subject the Upanishad says "No tongue can express that bliss which flows from the communion with God in to the soul of that man whose impurities are washed off by the practice of yoga, whose mind being abstracted from the outside world and is centered in the Supreme Power, because that happiness is felt by the human soul in its inner self alone.

9217970381

प्रभु को मित्र बना कर देखो

कन्हैया लाल

कोई व्यक्ति अपने देश के राजा के पास गया और समय मिलने पर बहुत विनम्रता से बोला———महाराज मैं आप से कुछ मांगने नहीं आया और न ही कोई फरियाद लेकर आया हूं। मेरी एक समस्या है, यह दुनिया मुझे इज्जत मान तो क्या देना, अपमान करती है। जिस कारणमैं दुखी रहता हूं। अगर आप इस का कुछ हल कर दे तो मैं आपका बहुत आभारी हूंगा।

राजा ने सुना तो बोले———देखो मैं कल राज्य की बड़ी चौगान में आ रहां हूं। तुम राज्य का झंडा पकड़े वही खड़े रहना।

राजा हाथी पर बैठा आ रहा था । तभी उसकी नजर उस व्यक्ति पर पड़ गई। राजा ने अपने अंगरक्षक से उस व्यक्ति को बुलवा भेजा। राजा ने उस व्यक्ति का हाल चाल पूछा और मंच पर अपने नजदीक ही स्थान दे दिया। उस व्यक्ति के मित्रों, सम्बन्धियों और विरोद्धियों ने जब उसे राजा के इतने करीब देखा तो हैरान रह गये। सम्मेलन खत्म हुआ तो राजा ने कहा अब घर जाओ समझो तुम्हारा समय बदल गया है। रात होने तक यह बात जो उसके मित्र,शत्रु और सम्बन्धि वहां नहीं थे उनको भी मालुम हो गई थी।

अगले दिन से ही सभी की दृश्टि बदल गई थी। जो अपमान करते थे वही मान करने लगे, उसके गुण गाने लगे।

सोचने की बात यह है कि राजा के पास कुछ देर बैठने से अगर इतना प्यार और मान मिल सकता है तो जो राजाओं का राजा ईश्वर है, अगर उसके पास बैठेंगे तो हमारी स्थिती क्या होगी?

तभी तो कहा है कि भगवान के मित्र बनो, उसके प्यारे हो जाओ और ऐसा विश्वास अपने हृदय में पैदा करो कि वह ईश्वर जो भी कर रहा है उसी में हमारी अच्छाई है। जो ईश्वर को सखा मान लेता है उसे किसी से भी किसी भी प्रकार का भय नहीं रहता। महर्शि दयानंद निर्भय हो कर समाज में फैले पाखण्डो का खण्डन निर्भीक हो कर इस लिये कर सके क्योंकि उन का ईश्वर पर अटूट विश्वास था।

पर उसका मित्र बनने के लिये कुछ शर्ते भी है जो कि व्यक्ति को निभानी होंगी। पहली, भगवान कहते हैं कि अगर मुझ तक पहुंचना है तो तुम्हें राग को छोड़ना पड़ेगा। किसी भी वस्तु व्यक्ति के साथ राग और मोह ईश्वर और व्यक्ति के बीच में एक दिवार है।

दूसरा सत्य का मार्ग अपनाओ। जब सत्य बोलोगे तो निर्भय रहोगे। ईश्वर निर्भय लोंगो के साथ ही मित्रता करता है।

तीसरा, प्रभु कहतें हैं कि मुझ से मित्रता और प्यार करने के लिये मेरे सभी प्राणियों, जिस में इंसान पशु ओर पक्षी सभी आतें हैं, उन सब से प्यार करों यह तभी सम्भव है जब तुम अपने परिवार का दायरा सिमित न रख कर उस को बढ़ाओं। यह केवल परिवार तक ही सीमित न रहें बल्कि इसमें मुहल्ला, नगर, देश और सारा विश्व आ जाये।

यदि हम ऐसे कर लेते हैं तो प्रभु हमारे मित्र बन जायेंगे। फिर हमें राजाओं के पास जाने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

स्वास्थय सुधार के लिये नंगे पांव बगीचे में रोजाना ऐक घंटा चले

पूरी सृष्टि का आधार भूमि, जल, अग्नि, वायु और आकाश हैं जिन्हे पंचतत्व कहा जाता है। इन सब को नियंत्रित रखना स्वास्थय के लिये बहुत अच्छा माना गया है। आपने योगियों द्वारा अपने आप को मिटटी में गर्दन तक गाड़े जाने की बात सुनी होगी। यह कोई करतव नहीं, बस अपने अपने सिस्टम को ठीक करने के लिये किया जाता है। यह सब तो मुश्किल है पर आप अपने शरीर को मिटटी से पोत कर यह प्राप्त कर सकते हैं। धरती के सर्म्पक में आने पर शरीर के बहुत से विकार ठीक हो जाते हैं।इस का सब से आसान उपाय है कि बस नगें पांव अपने बगीचे में रोजाना एक घंटे तक चले, पर यह ख्याल रखें की अन्धेरां न हो और कांटे और कीड़े मकोड़े न हो। कहते हैं एक सप्ताह में ही स्वास्थय में बहुत फर्क पड़ जाता है। यही नहीं पलंग पर सोने की जगह फर्श पर सोने से ही काफी फर्क महसूस करेंगे।

Editor, Publisher and Printer Bhartendu Sood. Printed at Amit Arts 36 MW, Industrial Area, Phase -1, Chandigarh. Phone No-0172-4614644 Place of Publication House No-231, Sector-45-A, Chandigarh-160047

वेदिक थोटस सवसकराईव करने
के लिए 9217970381 पर सम्पर्क करें

पुस्तक

(English Book of short stories--Our Musings)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी 70 छोटी कहानियों, जो कि अंग्रेजी समाचार पत्रों में समय समय पर प्रकाशित हुई हैं, का संग्रह एक पुस्तक में प्रकाशित किया है, जिसका नाम Our Musings है। इस पुस्तक की कीमत 150 रूपये है। जो भी इस पुस्तक को खरीदने का इच्छुक हो वह 100 रू भेजकर या हमारे बैंक ऐकाउंट में जमा करवा कर मंगवा सकता है। बैंक ऐकाउंट वही हैं जो कि वैदिक थोटस पत्रिका में दिये है। भेजने का खर्चा हमारा होगा।

कृपया निम्न बातों का ख्याल रखें,

पुस्तक ईगलिश भाषा में है।

पुस्तक केवल धार्मिक न हो कर जीवन के विभिन्न पहलुओं को छूती है

नीला सूद, भारतेन्दु सूद 9217970381

पत्रिका में दिये गये विचारो के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखको के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलो के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मानय है।

भ्रामक ही नहीं घातक भी हो सकती है किसी भी प्रकार की भविश्यवाणी

सीताराम गुप्ता,

प्रायः अधिकांष व्यक्ति अपने भविश्य के विशय में जानने को बहुत अधिक उत्सुक रहते हैं। भविश्य के विशय में जानने की अनेक पद्धतियाँ भी हमने विकसित कर रखी हैं। लेकिन क्या वास्तव में भविश्य में घटित होने वाली घटनाओं के विशय में सही–सही बतलाया जा सकता है? संभवतः नहीं। यदि भविश्य के विशय में जानना संभव होता तो हम आने वाली बीमारियों के बारे में जानकर उनके आने से पहले ही उनका उपचार खोज लेते अथवा कर लेते। इससे हम न केवल अनेक दुर्घटनाओं से बच जाते अपितु अपराधों को रोकने में भी सफल हो जाते। साथ ही अपराधियों के विशय में जानकारी प्राप्त करके उन्हें उचित दंड देना भी संभव हो पाता। यदि हम विवेकपूर्वक विचार करें तो यही पाते हैं कि भविश्य में क्या होगा ये बतलाने की कोई विज्ञानसम्मत सटीक पद्धति अथवा विधि है ही नहीं। और यदि ये संभव है तो भी इससे लाभ नहीं हानियाँ ही होने की संभावना बढ़ जाती है।

किसी के बतलाए अनुसार घटित हो जाना एक संयोग मात्र है। इस संदर्भ में एक कहानी याद आ रही है। एक चरवाहा था। वह समझदार भी बहुत था। वर्तमान घटनाक्रम को ठीक से समझकर उसके परिणाम के बारे में पहले ही बता देता था। लोग उससे इतने अधिक प्रभावित थे कि वे उसे पक्का भविष्यवक्ता मानने लगे। उसके भविष्यज्ञान की चर्चा दूर–दूर तक फैल गई। बात राजा के कानों तक पहुँचने में भी देर नहीं लगी। राजा ने चरवाहे को तलब किया और उसकी परीक्षा लेने का मन बना लिया। राजा ने अपनी मुट्ठी में एक टिड्डा बंद कर लिया और चरवाहे से पूछा कि बता मेरी मुट्ठी में क्या है। ठीक–ठीक जवाब देगा तो इनाम पाएगा वरना मौत के घाट उतार दिया जाएगा। चरवाहा बेचारा कैसे बताए कि राजा की मुट्ठी में क्या है? किसी चीज़ को बिना देखे हम कैसे बता सकते हैं कि वो क्या है? चरवाहा डर के मारे थर–थर काँपने लगा।

संयोग से चरवाहे का नाम भी टिड्डा था। उसने घटनाक्रम को ठीक से समझकर अनुमान लगाया कि अब जान बचनी मुश्किल है और राजा से कहा, "राजा तेरी मुट्ठी में बस टिड्डे की नन्ही सी जान है और कुछ नहीं।" चरवाहे ने तो बस इतना ही कहा था कि राजा की मुट्ठी में टिड्डे नामक उस चरवाहे की नन्ही सी जान है लेकिन राजा ने समझा कि चरवाहे ने सही भविष्यवाणी की है और उसने उस चरवाहे को अपने राज्य का प्रमुख ज्योतिषी नियुक्त कर दिया। कई बार ऐसे संयोग सही होने के कारण ही लोग इन तथाकथित भविश्यवक्ताओं पर विष्वास करने लगते हैं और उनके चंगुल में फँस

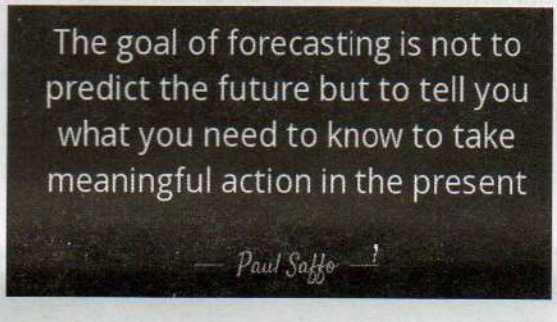

जाते हैं। एक उदाहरण से इस तथ्य को समझने का प्रयास करते हैं। कुछ लोग बच्चा पैदा होने से पहले ये बतलाने का कार्य करते हैं कि लड़का होगा या लड़की। साथ ही वे लड़का होने का उपाय भी बतलाते हैं। वैसे ये दोनों ही बातें कानून की दृश्टि से अपराध भी हैं।

इस तरह भविश्य बतलाना ग़ैरकानूनी भी है और ये सब करना और करवाना दंडनीय अपराध की श्रेणी में आते हैं लेकिन लोग कब मानते हैं? अब यदि वे सबके लड़का होने की भविश्यवाणी कर देते हैं तो भी उनकी लगभग पचास प्रतिषत भविश्यवाणी तो ठीक ही बैठेगी क्योंकि ये स्वाभाविक है। अब जिन परिवारों में लड़का पैदा होगा वे उस भविश्यवक्ता पर अनायास ही विष्वास करने लगेंगे लेकिन इस प्रकार की घटनाओं अथवा संयोगों पर विश्वास करना अंधविश्वास के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं। ये बिलकुल वैसा ही है जैसे परीक्षा में बहुविकल्पात्मक प्रष्नों के उत्तर देने के लिए केवल पहले, दूसरे, तीसरे अथवा चौथे विकल्प पर निषान लगा देना। इस प्रकार के प्रयास में बिना जानकारी के अथवा बुद्धि

का प्रयोग किए बिना भी काफी उत्तर ठीक हो जाते हैं और कई बार बहुत अच्छे अंक भी मिल जाते हैं। लेकिन क्या इसे सही ठहराया जा सकता है?

विवाह से पूर्व कुछ लोग लड़के और लड़की की जन्म कुंडलियों को मिलवा कर देखते हैं और अपेक्षित संख्या में दोनों के गुण मिल जाने पर ही विवाह के लिए तैयार होते हैं। लेकिन वास्तविकता ये है कि कई बार लड़के और लड़की के पर्याप्त गुण मिल जाने के उपरांत भी विवाह सफल नहीं हो पाते। अब इससे क्या सिद्ध होता है? यही न कि कुंडली–मिलान का कोई औचित्य नहीं। एक सज्जन का तो यहाँ तक कहना है कि यदि जन्म कुंडलियों का मिलान करने के बाद विवाह सफल नहीं होता है तो जन्म कुंडलियों का मिलान करने वाले व्यक्ति को दोशी मानकर उसे दंड दिया जाना चाहिए। बात बिलकुल पते की है लेकिन इस पद्धति की कमियाँ छिपाने के लिए कोई न कोई दूसरा बहाना ढूँढ़ लिया जाता है। गलत बात को सही और सही बात को गलत सिद्ध करने के लिए हमारे पास कुतर्कों की कमी नहीं होती।

वास्तविकता ये है कि कई बार जन्म कुंडलियों का सही मिलान करने के चक्कर में लोग अच्छे रिष्तों को नज़रअंदाज़ कर देते हैं और गलत जगह फँस जाते हैं कई बार जिसके बड़े भयंकर परिणाम होते हैं। भविश्य बतलाना केवल लोगों को बरगलाना व बेवकूफ बनाने का उपक्रम है और इसके परिणाम भी बहुत नुकसानदायक होते हैं। कोई विद्यार्थी पास होगा या फेल होगा ये कैसे बतलाया जा सकता है? यदि वह परिश्रम करेगा तो अवष्य पास होगा और यदि परिश्रम नहीं करेगा तो उसके पास होने की संभावना भी कम हो जाएगी। लेकिन यदि कोई भविश्यवक्ता इस प्रकार की पास या फेल होने की भविश्यवाणी करता है तो इसके दुश्परिणाम भी कम नहीं होते। यदि किसी अच्छे विद्यार्थी के विशय में भविश्यवाणी कर दी जाए कि वो पास होगा या प्रथम स्थान प्राप्त करेगा तो संभव है कि इस भविश्यवाणी के पष्चात वो विद्यार्थी परिश्रम करना ही छोड़ दे अथवा कम परिश्रम करे और पास होने पर भी अच्छे अंक प्राप्त न कर सके।

इसके विपरीत परिस्थितियों में भी कुछ ऐसा ही होने की संभावना बढ़ जाएगी इसमें संदेह नहीं। यदि किसी कमज़ोर विद्यार्थी के विशय में भविश्यवाणी कर दी जाए कि वो पास नहीं होगा तो इससे वो पूरी तरह से निराष हो जाएगा और वो पहले जितना परिश्रम करता था उतना परिश्रम करना भी छोड़ देगा और सचमुच फेल हो जाएगा जबकि वास्तविकता ये है कि परिश्रम करने के लिए प्रोत्साहित करके ऐसे विद्यार्थियों को भी सफलता के मार्ग पर अग्रसर किया जा सकता है। कई व्यक्ति इन भविश्यवक्ताओं के चक्कर में पड़कर सही निर्णय लेने की क्षमता ही खो बैठते हैं। कई लोग इन तथाकथित भविश्यवक्ताओं से पूछे बिना कोई काम नहीं करते और उनके चक्कर में पड़कर काम करना ही छोड़ देते हैं और इस तरह से कई बार अच्छे अवसर भी उनके हाथ से निकल जाते हैं। इस प्रकार से स्पश्ट हो जाता है कि भविश्य के विशय में बतलाना न केवल एक कपोलकल्पित विद्या है अपितु इसका दुश्प्रभाव भी कम नहीं पड़ता।

यदि हमें पता चल जाए कि अमुक दिन परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु हो जाएगी तो उससे क्या होगा? वैसे तो ये बतलाना संभव ही नहीं लेकिन यदि पता लग भी जाए तो हम उसकी मृत्यु से पहले ही बहुत दुखी हो जाएँगे। यदि हमें अपनी मृत्यु के समय के विशय में सही–सही ज्ञात हो जाए तो हम उसी क्षण से जीवन के प्रति उदासीन हो जाएँगे जो किसी भी तरह से उचित नहीं कहा जा सकता इसलिए हमें इस प्रकार की निरर्थक बातों अथवा अज्ञात भविश्य को जानने की आवष्यकता बिलकुल भी नहीं होती। हमें भविश्य के लिए सही योजना तो बनानी चाहिए लेकिन अनिष्चित भविश्य की चिंता बिलकुल नहीं करनी चाहिए। यदि हमने अपना वर्तमान सँवार लिया तो हमारा भविश्य तो अपने आप ही सँवर जाएगा। कुछ चालाक क़िस्म के लोग दूसरे लोंगों को बेवकूफ बनाकर पैसे ऐंठने के लिए इस प्रकार की विद्या का प्रचार–प्रसार करने में लगे रहते हैं। हमें हर हाल में सकारात्मक वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास कर अंधविश्वास और पाखण्ड से दूर रहना चाहिए अन्यथा हमारा पढ़ाई–लिखाई करना ही बेकार है।

मोबा0 नं0 9555622323

What has kept India afloat amidst last three years global crises?

Bhartendu Sood

Without any doubt India has done better on the economic front than most of the Western countries including the developed ones, in the last three years of catastrophe caused by the once in a century virus, named ' Covid' followed by Russia Ukraine conflict. It is for the first time that India has resisted to be taken hostage by the global situations shaped by the advanced economies like USA. If India has been able to thwart Inflation, poverty and hunger in this highly challenging period, the credit goes to our philosophy of life developed and inculcated over the ages.

This age old philosophy, which acted as a shield to majority of Indians, during the global economic crises, puts stress on valuing money and to save for the rainy days instead of indulging in wanton consumerism, spending ostentatiously and extravagantly, even if one has to beg or borrow. This philosophy is built on certain values and principles and finds place in all religions.

The first principle is austere living and frugality. We are taught to spend and invest conscientiously without indulging in the debt trap. Though, in the changed time we are being motivated to borrow money by the so called finance companies to meet many of such needs which can be curbed with some restraint, but our old philosophy advocated managing within the given resources Tete panv pasariye jeti lambi saur. This spares us the anxiety and agony that is the offshoot of debt. Our physical health stems from the state of mind and they say the best tonic for the healthy mind is frugality and self restraint.

The Second principle is circumspection and pragmatism in the use of the money. Our philosophy of life doesn't allow us to spend whatever we earn. Today we have future security instruments like Provident fund but if we go back by 70-80 years, our mothers used to keep their savings in hidden places or in the form of gold for the rainy days. Increase in the earnings for any household didn't mean increasing the expenditure proportionately. We had the custom of giving 'shagun' in the form of silver coins or currency notes so that that goes to the savings of the recipient woman. My wife still has the silver coins given to her as 'shagun' at the time of marriage or on important occasions. Larger earnings meant larger savings and that would be invested in property, land and gold for the lean period as they believed that time is dynamic and things which included economic condition didn't remain same. Best thing was that out of the surplus funds, something would be given for the philanthropic causes.

Third is contentment- They say 'jab aave santosh dhan, sab dhan dhuri saman 'Our philosophy of life puts stress on contentment rather than remaining unhappy and damning ourselves for not being wealthier. If discontentment makes one to strive for securing more by ethical means, it is good but, most of the times, in the absence of prudence, it drives many to indulge in speculative ways of earnings which can lead to impoverishment and debts, that have the capacity to take one to vices. Many family conflicts stem from this discontentment.

Fourth, we Indians believe in earning by the sweat of brow rather than depending upon free doles. I have seen many having agriculture as a side occupation even when they are in white collar job after acquiring decent degrees. This all adds to GDP and as a result we have food-grains even to offer to other countries.

I believe a few of these good practices have lead to our Middle class having enough cushion for the rainy season and it invariably makes Indians better equipped to confront economic crises, as we saw in the last three years.

9217970381

मूर्ती में ईश्वर

भारतेन्दु सूद

थाइलैंड की राजधानी बैंकांक में एक बुद्ध मन्दिर है वाट टरेमिट। बैंकाक का सब से दर्शनिय व थाईलैंउ के लोगों के लिए सब से अधिक श्रद्धा का स्थान है। इस की खास बात है इस में स्थापित भगवान बुद्ध की प्रतिमा। इस से जुड़ी एक बड़ी विचित्र घटना है। यह 700 साल पुरानी मूर्ती सोने की है और इसका बजन 5000 कीलो है। परन्तु इस बात का पता 1957 में ही लगा की यह सोने की है पहले इसे किसी और धातु का माना जाता था क्योंकि इस पर एक खास मिटटी का लेप था जो कि धातु के साथ चिपकी हुई थी। पहले यह मूर्ती उस मन्दिर में नहीं बल्कि किसी दूसरे स्थान पर रखी हुई थी ।

हुआ ऐसे की 1950 के आसपास यह निशचित किया गया कि एक भवय मन्दिर बनाया जाए और उस में बुद्ध की इस विशाल व अदभुत प्रतिमा को रखा जाए। इतनी बड़ी व भारी प्रतिमा को करेन CRANE द्वारा लाना ही सम्भव था । जब करेन द्वारा लाकर नए स्थान पर रख दिया गया तो एक रात किसी भिक्षु ने देखा कि मूर्ती के अन्दर से प्रकाश आ रहा है। सभी इकठठे हुए तो पता लगा कि करेन से लाते समय मूर्ती के उपर किए गए मिटटी के लेप में दरार आ गई थी जिस कारण अन्दर की सोने की धातु का प्रकाश आ रहा था। मूर्ती के उपर से मिटटी को हटाने का काम किया गया तो उस के अन्दर से साने की मूर्ती निकली।

अब प्रश्न यह उठा कि सोने की मूर्ती पर मिटटी का लेप क्यों दिया गया था? कहते हैं 300 वर्ष पहले बर्मा , जिसे अब मायनामार कहते हैं और जिसकी सीमा थाईलैंड से लगती है, उसने थाईलैंउ पर कब्जा कर लिया। पिछले समय में दूसरे देश पर कव्जा कर विजयी देश हारे हुए देश में लूटपाट करता व कीमती व आमूल्य चिजे जैसे की सोना हीरे जवाहारात को उठा कर ले जाते ।ऐसे में बुद्ध भिक्षु महात्मा बुद्ध की अमुल्य प्रतिमा के बारे में चिन्तित हुए। एक ने सलाह दी कि सोने की प्रतिमा पर मिटटी का मोटा लेप कर देते है । बर्मा की सेना इसे मिटटी की प्रतिमा मानकर छोड़ देगी। हुआ भी ऐसे ही लूटपाट करने वालों के पास इतना समय नहीं होता और प्रतिमा को मिटटी का मानकर उन्होने छोड़ दिया। परत्तु भिक्षु कहीं भी यह लिख कर नहीं गए कि यह प्रतिमा सोने की हैं और उस विशाल मिटटी की प्रतिमा की ही पूजा होती रही।

अब मैं आपका ध्यान ले जाता हूं सोमनाथ मन्दिर की और। इसमें भी सोने पर हीरे से जड़ी मूर्तीयां थी जिसका भारत पर आकमण करने वाले मुगल राजा मोहम्मद गजनी को पता था। जब विजय अभियान के बाद बापिस जा रहा था तो उन सोने पर हीरे से जड़ी मूर्तीयां को तोड़ कर हीरे सोना जवाहारात ले गया। पुजारी लोग सब को यह कह कर रक्षा करने से या लड़ने से यह कह कर रोकते। देते रहे कि भगवान अपनी रक्षा स्वयं करेगें।

मैं इन सब को इस तरह देखता हूं

1 पहला जैसे वेदों में कहा है। ईश्वर सब जगह है उस की मूर्ती नहीं बन सकती।

2 मूर्ती में ईश्वर को मानना सर्वव्यापक ईश्वर के स्वरूप को बहुत छोटा बना देना है।

3 मूर्ती पर सोना हीरे व अमूल्य धातुओं का प्रयोग चोरों और लुटेरों को निमन्त्रण देना है। अक्सर यह घटनाए होती रहती है फिर भी हम सबक नहीं सीखते।

4 जरा सोचिए जिस ईश्वर को आप सर्वशक्तिमान मानते हैं वह लुटेरों के आने पर स्वयं अपनी ही रक्षा करने में असमर्थ होता है।

5 भारत की लाखों ऐसी मूतीर्या विदेशों में उंचे भाव पर बेच दी जाती है। विदेशी इस का मजाक उड़ाते हैं––इंडियन गाोड फोर सेल।

6 मूर्ती पूजा वेद विरूद्ध है, यही कारण था स्वामी दयानन्द मूर्ती पूजा के विरूद्ध स्वामी दयानन्द जीवन प्रयन्त बोलते रहे। उन्होने मूर्ती पूजा को हर बुराई की जड़ माना है। ईश्वर की मूर्ती बनाने के बारे में यही विचार ईसलाम के प्रर्वतक मोहम्द साहब के थे।

इस लिए अच्छा होगा हम ईश्वर को सर्वव्यापक मान कर ध्यान द्वारा प्राप्त करने का प्रयत्न करें।

किसी ने बहुत सुन्दर कहा है,

हे मेरे भगवान, आप हैं बहुत महान ।
इसी लिए हम ने आप के लिए बनाया है एक सुन्दर सा मकान,
चाहे अपने लिए नहीं हैं कोई मकान।

आप यहीं करे विश्राम,
आप को मिल लेगें, जब हमें होगी फुरसत,
क्योंकि हमें रहते हैं बहुत से काम।

कृपया हर समय न आया करें खयालों में हमारे,
हमने इस पेट के लिए करने होते पुठे सीधे काम,
इसी लिए तो बनाया है आप के लिए एक मकान।

अब आप ही बताए कि भगवान मन्दिर में रहे या हमारे अन्दर रहे । आदमी बहुत बुद्धिमान है। उसने जो कुछ भी किया है बहुत सोचकर किया है।

जो मैने वात लिखी है आर्य समाजों में तो इसको कहने का साहस ही नहीं होता। आर्य समाज के नाम पर हवन कर दिया या संस्कृत में उलझाए रखा, यही काम आर्य समाजों में रह गया है। हवन कर दिया तो दक्षिणा मिलेगी। भजन सुना दिए तो पैसे मिलेंगे। भजन में भी मधुर आवाज की कीमत है, भजन के अन्दर क्या बोल रहे हो इस की कोई कीमत नहीं। आर्य समाज के सिद्वांतो की बातं को करने से क्या मिलेगा? वैसे भी जब से सब आर्य समाज व गुरूकुल आदि भाजपा के झंडे के नीचे आ गए हैं, स्वामी दयानन्द की मूल वातें करने का तो किसी में साहस ही नहीं।

चीते की अपेक्षा लंबी रेस का घोड़ा बनने में है समझदारी

सीताराम गुप्ता

चीता आजकल बहुत अधिक चर्चा में है। हो भी क्यों ना? देश से सत्तर वर्श पूर्व विलुप्त हो चुके चीते पुनः देश के जंगलों में आबाद होने जा रहे हैं ये कम प्रसन्नता की बात नहीं। बहरहाल चीतों का स्वागत किया जाना अनिवार्य है। प्रष्न उठता है कि चीतों के विलुप्त होने के क्या कारण थे? देष में चीतों के विलुप्त होने का एक कारण था उनको पकड़कर पालतू बना लेना और दूसरा षिकार के षौक के चलते उनको मार डालना। चीता एक अत्यंत फुर्तीला जानवर होता है जो धरती पर सबसे तेज़ दौड़ता है। इसकी दौड़ने की गति एक सौ बीस किलोमीटर प्रतिघंटा तक देखी गई है। चीते की इसी तेज़ रफ़्तार के कारण किसी व्यक्ति की चुस्ती–स्फूर्ति की तुलना आम तौर पर चीते से की जाती है। लेकिन क्या ये उचित है? क्या चीते की रफ़्तार से किसी की तुलना करना ठीक है? यदि चीते की रफ़्तार इतनी ही अधिक तेज़ होती है तो फिर उसका इतना अधिक षिकार कैसे किया गया?

यदि सबसे अधिक तेज़ रफ़्तार के वाबजूद चीते का अत्यधिक षिकार किया गया और इस कारण से वो विलुप्त हो गया तो क्या फिर भी किसी की जीवन षैली की तुलना चीते की रफ़्तार से करना उचित होगा? वास्तव में चीता बहुत तेज़ दौड़ता है लेकिन उसकी ये रफ़्तार स्थायी नहीं होती। चीता मात्र तीन सेकेंड में सौ किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ़्तार पकड़ लेता है लेकिन उसकी ये रफ़्तार एक मिनट से भी कम समय तक बनी रह पाती है। इसी दौरान वो अपने षिकार को दबोच लेता है। यदि इस दौरान वो अपने षिकार को नहीं पकड़ पाता है तो वो उसे छोड़ देता है क्योंकि वो लगातार उसका पीछा नहीं कर सकता। और यदि वो षिकार पकड़ लेता है तो भी वो अपने षिकार के साथ बैठकर आराम करता है क्योंकि वो बहुत जल्दी थक जाता है। उसकी इसी कमज़ोरी के कारण न केवल दूसरे जानवर उसका षिकार छीन ले जाते हैं अपितु वो स्वयं भी षिकार हो जाता है।

चीते का वैज्ञानिक नाम है एसिनोनिक्स जुबेटस। चीता एसिनोनिक्स वर्ग से संबंधित है और इस वर्ग का एकमात्र जीवित प्राणी है। एसिनोनिक्स एक ग्रीक षब्द है जिसका अर्थ होता है न घूमने वाला पंजा। चीते के पंजों की बनावट ही इसे सिंह, बाघ, तेंदुए और जागुआर आदि पैंथेरा वर्ग के जानवरों से अलग करती है। इनमें से बाघ के पंजों की जकड़ बहुत मज़बूत होती है। बाघ जब एक बार किसी जानवर को अपने पंजों में जकड़ लेता है तो उसका उस पकड़ से छूटना मुष्किल ही नहीं असंभव होता है। चीते के पंजे तेज़ दौड़ने के लिए तो उपयुक्त होते हैं लेकिन षिकार को पकड़ने के बाद उसे दबोचे रहने के लिए उतने उपयुक्त नहीं होते। अपनी इन्हीं कमज़ोरियों के कारण चीता हमारे देष की धरती से विलुप्त हो गया इसलिए चीते की चुस्ती–स्फूर्ति व अल्पकालिक तीव्र गति के बावजूद उसका अनुकरण करना उचित अथवा तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता। इससे चीते का महत्त्व कम नहीं हो जाता लेकिन चीते की इन्हीं कमज़ोरियों से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। हम उन कमज़ोरियों से बचने का प्रयास कर सकते हैं जिनके कारण चीते हमारे देष से विलुप्त हो गए।

हममें से बहुत से लोग चीते की तरह होते हैं जो किसी कार्य का प्रारंभ तो बड़े ज़ोर–षोर और उत्साह से करते हैं लेकिन जल्दी ही उनका जोष ठंडा पड़ जाता है और उनका प्रारंभ किया हुआ कार्य कभी पूरा नहीं होता। इससे उन्हें सफलता मिलना तो दूर इस दिषा में किया गया उनका सारा प्रयास भी बेकार चला जाता है। ऐसे क्षणिक उत्साह का क्या लाभ जिससे कार्य में पूर्णता भी प्राप्त न हो सके और साथ ही किए गए प्रयास बेकार हो जाएँ। हम बेषक किसी कार्य को

सामान्य अथवा धीमी गति से प्रारंभ करें लेकिन उस कार्य को करने की गति में न केवल सुधार होता रहना चाहिए अपितु उस कार्य में निरंतरता भी बनी रहनी चाहिए। साथ ही किए जाने वाले कार्य पर हमारी पूरी पकड़ भी होनी चाहिए। हम अपने परिश्रम से जो अर्जित करें वो हमारी पकड़ से दूर न जाने पाए। इसके लिए हमें अपने अंदर निरंतर कार्य करने की क्षमता का विकास करना चाहिए। हम जिस कार्य को प्रारंभ करें उसे पूरा करके ही दम लें। कई बार कार्य पूरा होने के बीच में कुछ अड़चनें भी आ सकती हैं अतः धैर्य रखना भी अनिवार्य है।

जितने भी धावक होते है वे अपनी दौड़ का प्रारंभ सामान्य गति से ही करते हैं। यदि एक धावक प्रारंभ में ही पूरा जोर लगा दे तो संभव है जल्दी थक जाए और अत्यधिक थकान के कारण दौड़ पूरी भी न कर पाए। दौड़ पूरी करने और जीतने के लिए अनिवार्य है निरंतरता अथवा कंसिस्टेंसी। लंबी दौड़ में जीतने के लिए तो ये और भी ज़रूरी हो जाता है। अंग्रेजी में भी कहा गया है कि स्लो एंड स्टेडि विंस द रेस। हमारे अंदर उत्साह हो लेकिन साथ ही उस उत्साह को अंत तक बनाए रखना भी अनिवार्य है। हम अत्यंत उत्साह से आगे बढ़ते हुए मंजिल के बिलकुल पास तक पहुँचकर भी थककर बैठ जाएँगे तो उसका कोई लाभ हमें नहीं मिल सकेगा चाहे मंज़िल सामने ही क्यों न दिखलाई पड़ रही हो। यदि जीवन में कार्य व प्रयास के प्रति उत्साह व निरंतरता बनी रहे तो कछुए जैसा धीमी चाल से चलने वाला प्राणी भी तेज़ चाल से चलने वाले खरगोष से जीत सकता है इसमें संदेह नहीं। हमें स्वयं को चीता नहीं लंबी रेस का घोड़ा बनाने का प्रयास करना चाहिए।

अच्छाई को फौरन अमल में लाना ही फ़ायदेमंद

सीताराम गुप्ता

जब भी हम फल–सब्जियाँ ख़रीदने के लिए बाज़ार जाते हैं तो कई बार वहाँ बहुत अच्छी क़िस्म के फल दिखलाई पड़ जाते हैं। ऐसे अच्छे कि उन्हें देखकर मुँह में पानी भर आता है और हम फ़ौरन वे फल ख़रीदकर ले आते हैं। घर पर आकर पता लगता है कि घर पर पहले ही कुछ फल रखे हुए हैं और अगर उन्हें आज ही इस्तेमाल नहीं किया गया तो वे कल तक ख़राब हो जाएँगे। हम ताज़ा लाए हुए फलों को रख देते हैं और घर पर पहले से रखे पुराने फल इस्तेमाल कर लेते हैं। लेकिन ताज़ा फलों को देखकर जो उत्साह मन में भर गया था वो ठंडा पड़ गया क्योंकि पहले से रखे हुए पुराने फल कुछ बासी हो जाने के कारण उतने स्वादिश्ट नहीं लगे।

अगले दिन जब पिछले दिन ख़रीदे हुए आकर्शक व रसीले फलों के सेवन करने की बारी आई तो भी मज़ा नहीं आया कारण फल कुछ ज़्यादा ही पक चुके थे। ज्यादा पक ही नहीं चुके थे कुछ ढीले और दाग़ी भी हो गए थे। उनका स्वाद भी थोड़ा बदल चुका था। प्रायः ऐसा ही होता रहता है जीवन मे। प्रायः पुरानी चीज़ों अथवा खाद्य पदार्थों को बचाने के लोभ अथवा चक्कर में नई चीज़ों को भी पुराना करके इस्तेमाल करने को अभिषप्त होते हैं हम। इससे बचने का क्या उपाय हो सकता है? इसका यही उपाय हो सकता है कि हम पुरानी चीज़ें समाप्त हो जाने के बाद ही नई चीज़ें ख़रीदें और जहाँ तक हो सके पहले केवल अच्छी चीज़ों का ही इस्तेमाल करें अन्यथा ये दुश्चक्र कभी नहीं टूटेगा और अच्छी चीज़ें उपलब्ध होने के बावजूद हमें हमेषा खराब चीज़ें इस्तेमाल करनी पड़ेंगी।

प्रायः यही स्थिति हमारी आदतों अथवा व्यवहार के विशय में होती है। हम बहुत कुछ नया और अच्छा सीखते रहते हैं लेकिन जब उसको जीवन में प्रयुक्त अथवा क्रियान्वयन करने का अवसर आता है तो हम प्रायः नई सीखी हुई अच्छी बातों की उपेक्षा करके पुरानी बातों को ही अपने व्यवहार में लाते रहते हैं। ये स्वाभाविक भी है क्योंकि पुरानी आदतें मुष्किल से छूटती हैं। ऐसा करने के हमारे पास तर्क भी कम नहीं होते। मान लीजिए कि हमने अभी हाल ही में सीखा है कि हमें हर परिस्थिति में केवल सच बोलना है। जब सचमुच सच बोलने का अवसर आता है तो हम ये सोचकर या कहकर सच बोलने अथवा पूरा सच बोलने से पीछे हट जाते हैं कि लोग इतने अच्छे नहीं हैं कि उनके सामने सच बोला जाए या आज सच बोलने का समय नहीं रहा या सच बालने वाले को लोग मूर्ख समझते हैं और उसे ही सबसे ज़्यादा धोखा देते हैं।

प्रायः हम कहते अथवा सोचते हैं कि जब हमारा अच्छे लोगों से वास्ता पड़ेगा तभी हम अच्छा व्यवहार करेंगे अथवा अच्छी आदतों को व्यवहार में लाएँगे। हरेक व्यक्ति के सामने अच्छाई का प्रदर्षन करने का क्या फायदा? वास्तव में हम जो करते हैं वो दूसरों के लिए नहीं अपितु वह स्वयं हमारे लिए ही होता है। अपनी आदतों अथवा व्यवहार द्वारा हम स्वयं अपने परिवेष व समाज का निर्माण करते हैं। यदि हम बेहतर समाज के निर्माण के लिए कार्य नहीं करेंगे तो हमें अपेक्षाकृत कम बेहतर अथवा बुरे समाज में रहने के लिए विवष होना पड़ेगा। हम जितनी जल्दी अच्छे समाज का निर्माण करने में सफल होंगे उतनी ही जल्दी हमें उस समाज में रहने के लाभ मिलने लगेंगे और उसके लिए सबसे उपयुक्त समय आज का ही हो सकता है। संभव है भविश्य में हमें इसके लिए अवसर ही न मिले।

जिस प्रकार से हम अच्छी तरह से पके हुए ताज़ा फलों का सेवन करके अधिक स्वाद व ऊर्जा पा सकते हैं और बासी फलों के सेवन से उत्पन्न हानिकारक स्थितियों से बच सकते हैं उसी प्रकार से नई सीखी हुई अच्छी बातों को व्यवहार में लाकर हम न केवल पुरानी ग़लत आदतों से मुक्त होकर अपने व्यक्तित्व को अधिकाधिक प्रभावषाली व आकर्शक बना सकते हैं अपितु संपर्क में आने वाले सभी व्यक्तियों का स्नेह व सहयोग भी प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन यह तभी संभव है जब हम पके हुए ताज़ा व अच्छे फलों को बासी अथवा खराब होने से पूर्व सेवन करने की तरह ही जो भी अच्छी बातें हम सीखें उन्हें उसी समय से अपने व्यवहार में लाना प्रारंभ कर दें और जो आदतें अच्छी नहीं हैं उन्हें भूलकर भी प्रयोग न करने का संकल्प लें।

अच्छी चीजों की एक विषेशता ये होती है कि ख़राब चीज़ों के साथ मिलकर वे भी ख़राब हो जाती हैं। यदि हम ताज़ा फलों अथवा सब्ज़ियों को बासी अथवा ख़राब फलों व सब्ज़ियों के साथ रख देंगे तो अच्छे फल अथवा सब्ज़ियाँ भी बहुत जल्दी खराब होने लगेंगी। अच्छी चीज़ें हों अथवा अच्छी आदतें उन्हें ख़राब चीज़ों अथवा ग़लत आदतों के साथ कभी नहीं मिलाना चाहिए या व्यवहार में लाना चाहिए अन्यथा उनके विकृत अथवा दूशित होने में भी देर नहीं लगेगी। जिस प्रकार से अच्छे फलों का समय पर सदुपयोग न होने पर वे ख़राब हो जाते हैं अथवा हम उन्हें रखकर ही भूल जाते हैं अच्छी बातों को भी षीघ्र व्यवहार में न लाने पर वे भी समयानुसार अनुकूल अथवा उपयोगी नहीं रहतीं अथवा विस्मृति के गर्भ में चली जाती हैं। यदि हम अपने अच्छे विचारों अथवा अच्छी आदतों को कार्यरूप में परिणत नहीं करेंगे तो कालांतर में वे नकारात्मक विचारों के कचरे में दबकर रह जाएँगी जिससे उन्हें जानने व सीखने का कोई लाभ नहीं मिलेगा।

यदि हम हमेषा अच्छे फल खरीदकर लाते हैं तो उनको रोज़–रोज़ बासी करके खाने का क्या औचित्य हो सकता है? ये प्रबंधन की कमी कही जा सकती है। हमें इस आदत को बदलना ही होगा अन्यथा जीवन में कभी अच्छे फल नहीं खा पाएँगे। इसी प्रकार से नई बातों को सीखने का क्या लाभ यदि हम उन्हें अपने जीवन में लागू ही न कर पाएँ? नई बातें जानने व सीखने में हम बहुत रुचि लेते हैं और उसके लिए हर प्रकार का त्याग भी करते हैं। यदि सीखी हुई बातों से लाभान्वित नहीं होंगे तो इस त्याग व प्रयास का कोई महत्त्व ही नहीं रह जाएगा। जहाँ तक बुरी आदतों अथवा व्यवहार का त्याग करने की बात है इससे कभी भी व किसी भी स्तर पर किसी प्रकार की कोई हानि होने की संभावना नहीं होती। अषुभ के त्याग का अर्थ है षुभ के लिए स्थान निर्मित करना। इसलिए अषुभ के त्याग व षुभ के क्रियान्वयन में कभी देर नहीं करनी चाहिए।

एक ही समय पर हम बासी व ताज़ा फलों का इस्तेमाल करें ये भी कुछ व्यावहारिक सा नहीं लगता। इसी प्रकार से हम अच्छी व बुरी दोनों प्रकार की आदतों को व्यवहार में लाते रहें तो भी बात नहीं बनेगी। बुरी आदतों अथवा व्यवहार का ख़मियाज़ा तो हमें भुगतना ही पड़ेगा। यदि हम किसी आयोजन में जाते हैं तो अच्छे से अच्छे कपड़े पहनकर ही जाते हैं। यदि हमने बहुत महँगे व अच्छे कपड़े पहने हैं लेकिन एक या दो चीज़ें ठीक नहीं हैं तो षेश महँगे अच्छे कपड़े पहनने का भी अच्छा प्रभाव नहीं पड़ेगा अतः हमारे सारे कपड़े ही नहीं जूते, टाई व अन्य सभी वस्तुएँ भी उन्हीं के अनुरूप होनी चाहिएँ। हमें समग्र रूप से सब कुछ ठीक से करना होगा। हमें अच्छा व्यवहार करना होगा और हर व्यक्ति से अच्छा व्यवहार करना होगा। हमें हर जगह व हर समय अच्छा प्रदर्षन करना होगा तभी बात बनेगी अन्यथा कुछ अच्छी बातें भी बेमानी होकर रह जाएँगी।

Swami Dayanand Saraswati (1824-1883

Kewal Ahluwalia

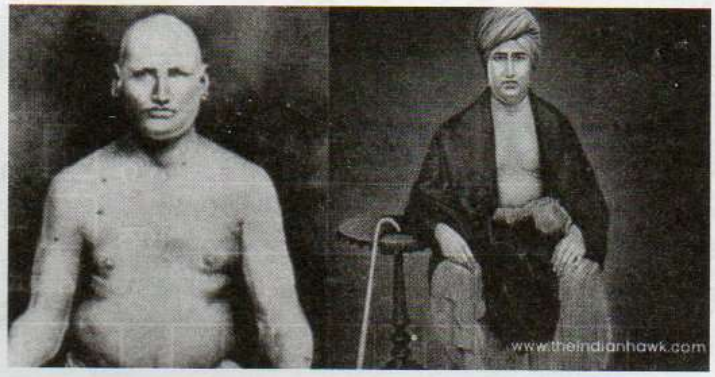

The concept of Nirvana is not new in Hinduism. The origin of the word nirvana relates to enlightenment. Achieving nirvana is to make all earthly feelings like suffering and desire disappear. Nirvana has also been used for other religious people but in Arya Samaj there is only one who attained Nirvan was Maharishi Swami Dayaynand Sarswati.

Swami Dayanand Saraswati (1824-1883), was more than just a religious leader. The founder of the Hindu reform organization, 'Arya Samaj', with 10 principles that are based purely on God, soul and nature. This organization brought about immense changes in the religious perceptions of Indians. On Diwali day in 1883 one light disappeared from our midst, but it lit up millions of lamp on this earth and his message is enshrined in the hearts of millions of people on this earth.

Maharishi Swami Dayanand Saraswati Dayanand a rishi in the long line of ancient sages and the great social reformer and the seeker of truth left his mortal frame on the day of Diwali and attained Nirvana. This anniversary is celebrated throughout this world where ever an Arya Samaj is established. He wanted the regeneration of India with his message of "BACK TO VEDAS" the roots of their religion and to get out of darkness and enlighten your mind to the true knowledge because Vedas are the scriptures of true knowledge. He felt that Hindus would be able to improve the depressive religious, social, political, and economic conditions prevailing in India in his times.

His legacy the Arya Samaj stands as the pillar of society to remind us to lead a spiritual life. It is also a reminder to dedicate ourselves to work for Arya Samaj to fulfill his mission of KRINANTO VISHVAM ATYAM (Make this world noble).

Rabinder nath tagore's tribute to Maharishi Dayanand Saraswati-

I offer my homage of veneration to Swami Dayanand-the great path maker in modern India who through bewildering tangles of creeds and practices-the dense undergrowth of the degenerate days of our country cleared a straight path that was meant to lead the Hindus to a simple and rational life of devotion to God and service for man.With a clear sighted vision of truth and courage of determination ,he preached and worked for our self respect and vigourous awakenment of man that could strive for a harmonious adjustment with progressive spirit of the modern age and at the same time keep in perfect touch with that glorious past of India when it revealed its personality in freedom of thought and action in an unclouded radiance of spiritual realisation.

July 15,1933

. Canada

समाज में जड़ जमाता अन्धविश्वास

ई.जे.एय सामन्त

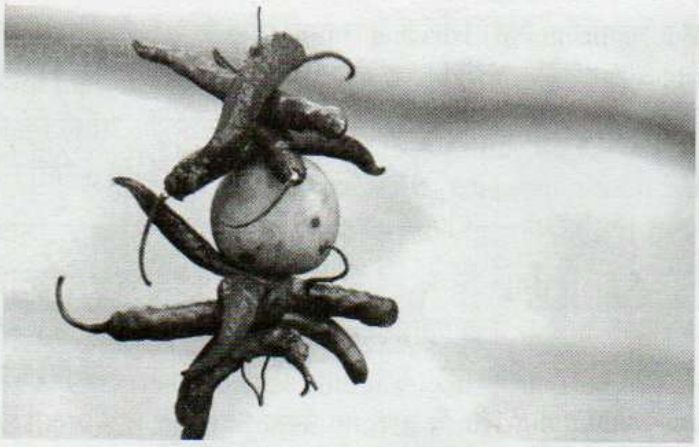

विभिन्न सम्प्रदायों, जातियों, धर्मों में विभिन्न प्रकार के अन्धविश्वास व्याप्र हैं। ये बिना किसी प्रामाणिकता के, बिना किसी वैज्ञानिक आधार के हमारे बीच में प्रचलित हैं। हम इनको इसलिये मानते हैं कि हमारी पिछली पीड़ी इनको मानती आयी है, क्या अन्धविश्वास हमें कायर तो नही बना रहा, इससे राष्ट कमजोर तो नहीं हो रहा है इस पर सभी को पुनर्विचार करने की आवश्यकता हैं।

हिन्दू समाज में कुछ जड़ मान्यतायें व्याप्त हैं जो हमें कमजोर करती हैं। भूत प्रेत के नाम से बच्चों व बड़ो में एक अज्ञात भय समाता रहता है जबकि भूत बीते समय को कहते हैं। जबकि प्रेत निषप्राण शरीर को कहते है यह अपने शरीर से कोई हरकत नहीं कर सकता। उसके द्वारा किसी को डराने का तो प्रश्न ही नहीं उठता है उस मृत शरीर को या तो दफनाया जाना ही या अग्नि को समर्पित कर अन्तेष्ठि कर्म किया जाना है, प्रेत नाम से काल्पनिक भय पैदा नहीं किया जाना चाहिए।

बिल्ली हमारा रास्ता काट दे तो अपशकुन मान लिया जाता है, आदमी अपनी यात्रा भर में भयभीत शंकित बना रहता है बिल्ली का रास्ते के आर पार जाना उसकी स्वाभाविक चाल है वह हमारे जीवन को प्रभावित नहीं कर सकती, मंगल या शनिवार को किसी मित्र के घर जाना उचित नहीं मानते, विभिन्न दिशाओं में भ्रमण को निकलने के लिये भी अलग–अलग दिन निर्धारित कर रखे हैं गलत दिन को घर से निकल गये तो पूरे यात्राकाल में व्यक्ति अनहोनी से डरा रहता है, नौवें या तेरहवें दिन घर लौटने में भी डर समाया रहता है। प्रत्येक शुभ कार्य के लिये प्रत्येक पल क्षण शुभ है तथा हर बुरा कार्य करने के लिये हर पल बुरा है।

नया भवन बनाने उसमें प्रवेश करने पर किसी की नजर न लगे मानव खेपड़ी की आकृति मकान की चोटी में टांग देते हैं प्रवेश द्वार पर जूते की नाक ठोक देते है ये सब बचकानी हरकत है। ईश्वर के अनेकों नामों में ओ३म उसका सर्वश्रेष्ठ नाम है आपके भवन की छत में ओ३म की पताका ध्वज लहराता रहे तो आपके व आपके परिवार के प्रत्येक सदस्य को तथा देखने बाले को अभयदान व आनन्द की अनुभूति होती रहेगी।

गृहदशा के फेर में हम राह शनि को प्रसन्न करने के चक्कर में पड़े रहते है। ये जड़ गृह व नक्षत्र हमारे जीवन को कैसे प्रभावित कर सकते है सुख दुःख तो कर्मानुसार दिन और रात्रि की तरह आते जाते रहते है कर्मानुसार फल मिलना केवल ईश्वर के हाथ में सन्निहित है ओर कोई व्यवस्था उसे घटा बड़ा नहीं सकती, हमारे मार्ग में रास्ते में कोई अंगहीन व्यक्ति भीक्षा हेतु याचना कर रहा होता है तो हम उसकी अनदेखी कर आगे बड़ जाते है परन्तु वही एक लम्ब तडंग व्यक्ति बीडी पीते हुये दरवाजे में शनिदान की आवाज लगाता है तो दौडकर उसको दान ज्यादा श्रेष्ठ समझते है। ऐसा व्यक्ति तो मेहनत मजदूरी कर धनोपार्जक कर सकता है शनिदान की आवाज पर भीख मांग रहा है ऐसे को दान देकर हम उसके निटठल्लेपन को बड़ावा दे रहे होते है। दानपात्र व्यक्ति को ही दिया जाता चाहिये।

घर परिवारों में बड़े बुजुर्गों के जीवित रहते हम उनकी उचित सेवा टहल देखभाल सेवा सुश्रुशा नहीं करते, प्रायः प्रत्येक बुजुर्ग आज उपेक्षा का शिकार है परन्तु उनकी मृत्यु के उपरान्त मृतक भोज, पिण्डदान पितृ श्राद्ध आदि किये जाने की प्रथा प्रचलित हैं, वेद और गीता में पितर जीवित माता पिता दादा दादी पर दादा पर दादी को कहा गया है उनकी सेवा की जान के स्थान पर मृत्यु के उपरान्त पाखण्ड रचा जाता है बुजुर्गों की ठीक से देखभाल ही श्राद्ध तर्पण है।

दिवाली से पहले धनतेरस के दिन हम वर्तन खरीद कर लक्ष्मी को घर लोन का प्रयास करते है वस्तुतः लक्ष्मी तो उस दिन आंख बन्द कर वर्तन बचने वाले के घरं जा रही होती है, लक्ष्मी तो केवल मेहनत कसं व्यक्ति के पास आती व ठहराती भी है, अपनी गृह दशा सुधारने के चक्कर में मंदिरों मे निरीह अवोध जानवरों की बलि दढ़ाते है इससे कोई देवता प्रसन्न नही होता है बलि तो अपने अन्दर छिपे दुःर्गुणों दुरव्यसनों की चड़ानी चाहियें राष्ट्र अवतारवाद चमत्कारवाद की अवधारणा से कमजोर हो रहा है, मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा भी एक बड़ अन्धविश्वास है।

तात्पर्य यह है कि हमको अन्धविश्वासों जड़मान्यताओं से उबर कर निमेकि राष्ट्र के निर्माण में मद्द करनी चाहिये। आप आर्य समाजी तभी हैं यदि **आप अपने आप को अन्धविश्वासों जड़मान्यताओं से उबार चुके हैं। सिर्फ हवन करने या कुद मन्त्र बोलने से आप आर्य समाजी नहीं बन जाने। आर्य समाज के सिद्धांत वेदों पर अधारित है। वेद में मूर्ती पूजा, पशु बली वाले यज्ञ जन्म के आधार पर जाति प्रथा और दूआ दूत नहीं।**

नैनीताल

Understanding and commonsense solve many a problems faster than the bookish knowledge

Urvashi Goel

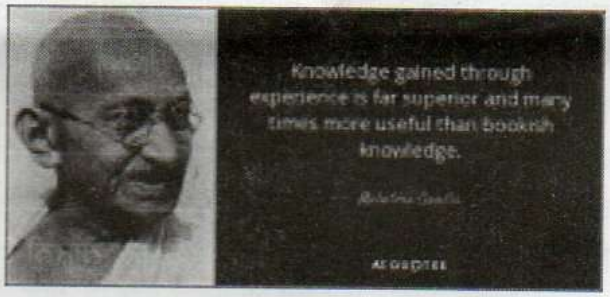

The ruler of an important country was in a fix after his favourite horse, a spirited charger, went missing. The king sent several of his ministers and guards to look for the horse that seemed to have just disappeared, but to no avail. In desperation, the king offered a large sum for its return. This too failed. The days went by and no one had an inkling about where the horse was.

In the king's court was a simple soul, who told the king that he could find the lost horse. "You, when the best and brightest of men in my court have failed?" mocked the king. "Yes, sir," replied the simpleton. As the king had nothing to lose, he grudgingly agreed. Within hours, the horse was tethered in front of the royal palace. When the king saw it, he was ecstatic and thankful. He issued a large reward to his simple-minded servant and was eager to know how he found the horse. "Why, sire, it was very easy, indeed," said the simpleton, "I merely put myself in your horse's place and asked myself where I would have gone were I a horse. I went there. And there your horse was!"

As the above story suggests that understanding and commonsense are something that that can solve many a problems faster than the bookish knowledge. But, problem is that every man sees the world not, as it is, but as he is. His coloured vision tints all that is within his focus to the colour through which he views the world around him.

Understanding is merely to put ourselves in the shoes of another. When the reality of where the other person is coming from, is clear, understanding another becomes a simple exercise. This fosters deep human bonds of friendship.

As a thinker put it, "Understanding another permits us to escape the isolation of our separate selves and enter into that warm circle of human kinship and friendship!"

दुख और असफलता भी आपकी गुरू है

भारतेन्दु सूद

गुरू उसको कहा गया है जो कि अपको रास्ता दिखाता है। अगर इस परिभाशा को मध्य नजर रखें तो दुख और असफलता भी आपकी गुरू है, कारण जितना कुछ व्यक्ति दुख और असफलता से सीखता है, शायद उतना किसी और से नहीं। अगर आप अपने जीवन को टटोल कर देखेंगे तो शायद मेरी बात आपको ठीक लगे।

कोई भी असफलता हमें एक चिन्तन की अवस्था में ले आती है। इस चिन्तन में व्यक्ति अपने द्वारा किये गये कार्य का अवलोकन कर्ता है और ऐसा में अपनी उन गलतियों को ढूंढ लेता है जिन के कारण की वह असफल हुआ। चिन्तन वैसे ही है जैसे कि गुरू से बातचीत करना। अगर आप चिन्तन नहीं करते हैं तो मैं नहीं सोचता बाहर वाले व्यक्ति भी आप की सुधार की प्रकिया में कोई अधिक सहायता कर सकते हैं। यह भी सत्य है कि जब हम कारण और नया रास्ता ढूंढ लेते हैं तो हम दुख और असफलता को भूल जातें हैं और हम में उस कार्य को पुनह करने का नया उन्साह उमढ़ पड़ता है।

जो व्यक्ति दुख और असफलताओं से उभर कर उपर उठता है उसका नजरिया लोगों को समझने और उनका समाधान करने में दूसरे व्यक्ति से अलग ही होता है। संवेदनशीलता, करूणा उसमें स्वभाविक तौर पर होती है। महात्मा गांधी का एक नेता के रूप मे सफलता का मुख्य कारण यह था कि उन्होने जिन्दगी को आम लोगों के आईने से देखा था। दक्षिण अफ्रिका में उनका जीवन सुगम या आरामदायक नहीं था। बहुत बार दुखों से, असफलताओं से, दूसरों द्वारा की गई जयादतीयों ये गुजरना पढ़ा पर वह चिन्तक थे और लेखक भी। उसी चिन्तन ने उन में संवेदनषीलता जैसा गुण पैदा कर दिया और वह ऐसे नेता बने जिन्हें सब ने सराहा। दुख एक तोहफा भी हो सकता है, जैसे कि श्री रविन्द्र नाथ टैगोर के यह षब्द ब्यान कर रहे हैं

Tagore in Gitanjali says, "I had let my mind remain engrossed in worldly affairs; in the name of pleasure what I got was only sorrow; but what you offered in the name of sorrow was actually joy". जिन्दगी के कार्यों में डूबा जिन को मैं आनन्द की अनूभूती देने वाला समझता रहा, वे तो वास्तब में दुख देने वाले निकले। और जिन्हें मैं दुख समझता रहा वे सुख देने वाले साबित हुये। अमेरिका को नई दिशा देने वाले राष्ट्रपति अबराहम लिंकन की सब से अड़ी बात यह थी कि वह असफलताओं से ही सीखे और उसी ने उस को उस मुकाम तक पहुंचा दिया। परन्तु चिनतन हम तभी कर सकते हैं जब अपने आसपास की दुनिया को, जिस में की मोबाईल फोन भी आ जाता है, कुछ समय के लिए छोड़कर हम शांत हो कर वैठे।

नई पीढ़ी और उन के माता पिता के लिये सब से बड़ी शिक्षा यही है कि बच्चों को संघर्ष करने की आदत डालें। दुखों और असफलताओं कों अपना गुरू बनायें। वे तप कर सोना बन कर निकलेगें। वरना हो सकता है वे वह न बनें जो बन सकते थे। जरा मुड़ कर देंखें, क्या आपका जीवन इतना सुगम था जितना की आप ने अपने बच्चों का बना दिया है। और यह सुगम जीवन जीने की आदत बहुत बार उनका शत्रु बन जाती है।

विचार की शक्ति

नीला सूद

विचार की शक्ति तूफानो और भूकम्पों से भी अधिक है। एक विचार बिना किसी शस्त्र के वड़े समाराज्य तक को बदल सकता है।

नेपोलियन सारे योरप को जीतने का सपना लेकर निकला था। जर्मनी को परस्त करने के बाद वह आगे बड़ता हुआ एक देश से दूसरे देश पहुंचा और बहुत सारे देश उसके अधीन आ गए। तभी लड़ते हुए वह योरप के एक छोटे से देश में पहुंचा। वहां का हर एक पुरूष, स्त्री डटकर इस संकल्प के साथ लड़ा कि नेपोलियन को चाहे कुछ भी हो अपने देश पर कब्जा नहीं करने देंगे। नेपोलियन के आगे बड़ते हुए पांव रूक गए।

नेपोलियन हैरान था। उसने कारण जानना चाहा कि क्या बात है इस छोटे से देश कि मेरी इतनी बहादुर व वड़ी सेना को भी आगे बड़ने में मुश्किल आई है जो कि जर्मनी जैसे बड़े देश में भी नहीं आई थी। वह उस देश के एक शहर में वेश बदल कर जानने के लिए धूम रहा था कि उसे एक मकान से एक छोटी सी लड़की की रोने की आवाज सुनाई दी। उसने रोने का कारण पूछा तो जवाब मिला मैं निर्धन हूं और छोटी हूं। न तो सेना में भर्ती हो सकती हूं और नहीं धन दे सकती हूं। मुझे दुख है कि न चाह कर भी मैं अपने देश की सेवा नहीं कर सकती। नेपोलियन ने उसे सुना और फिर बोला चाहे तुम निर्धन हो परन्तु तुम्हारे बाल बहुत सुन्दर है। यह कह कर वापिस चल पड़ा ।

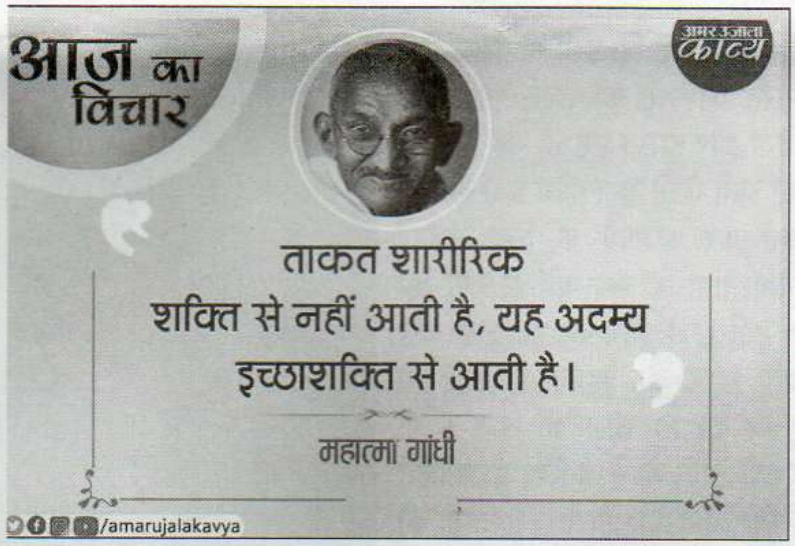

नेपोलियन के जाने के बाद उस कन्या के मन में विचार आया कि अगर मेरे बाल सचमुच इतने सुन्दर हैं तो मैं क्यों नहीं इन सुन्दर बालों को बेच कर पैसा देश के रक्षा कोष में दे देती। वह पास के नाई के पास गई और बोली ––क्या मेरे यह सुन्दर बाल बिक सकते है। नाई बोला क्यों नहीं, परन्तु तुम्हें इस छोटी आयु में इन्हें बेचने की क्या जरूरत पढ़ गई है ? उसने अपने दिल की बात नाई को बता दी। नाई ने कहा––तुम इतने सुन्दर बाल न कटवाओं मैं तुम्हें पैसा अपनी तरफ से दे देता हूं । कन्या ने कहा ––यदि मैं आप से पैसे लेती हूं तो वह मेरा येगदान तो नहीं होगा। नाई उस लड़की के संकल्प व देश के लिए प्यार से हैरान था । वह लड़की को उसके संकल्प से विचिलत न कर सका । लड़की ने बाल बेच कर सारा पैसा रक्षा कोष में दे दिया। जैसे ही यह बात लोगों में फैली लोगों का उत्साह दुगना चौगना हो गया। यदि एक गरीब लड़की देश के लिए अपने सुन्दर बाल बेच सकती है तो हम क्यों न कुछ करें । देखते देखते उस देश के रक्षा कोष में गहने, सोना व रूपए के ढेर लग गए। नेपोलियन तक भी उस निर्धन कन्या के बाल बेच कर दान देने की बात पहुंची। उसे लगने लगा कि इनको हराना आसान नहीं और उस देश को उसने अपने विलय अभियान से अलग का दिया।

यह है विचार की शक्ति। एक निर्धन लड़की के एक विचार ने सारे देश में नया उन्साह भर दिया।

गन्धारी का आंखों पर पटटी बांध कर जीवन जीना कहां तक उपयुक्त था

नीला सूद

अभी मुझे ब्रहमकुमारी संस्था, चण्डीगढ़ द्वारा आयोजित एक बहुत अच्छे प्रवचन को सुनने का सुअवसर मिला। उसमें उपदेशक महोदया बहन उषा ने गीता और महाभारत पर बोलते हुए एक बहुत संवेदनशील विषय को छूआ। विषय था कि कौरवों की मां व धृतराष्टर की पत्नि रानी गन्धारी का जीवन प्रयन्त आंखों पर पटटी बांध कर जीवन जीना कहां तक उपयुक्त था।

कथानक के अनुसारं राजा धृतराष्टर जन्म से ही अन्धे थे। उनके विवाह के बाद जब गन्धारी को पता लगा कि उसके पति देख नहीं सकते तो एक पतिवर्ता स्त्री का धर्म अपने सामने रखते हुए उसने यह सोचा कि जब उसके पति देख नहीं सकते तो उसे भी आंखों का सुख भोगने का कोई अधिकार नहीं और उसने अपनी आंखों पर पटटी बांधते हुए यह प्रण लिया कि वह जीवन भर अपनी आंखों की पटटी नहीं खोलेगी। कथानक के अनुसार गन्धारी ने जीवन प्रयन्त अपनी आंखों पर पटटी बांख कर रखी।

विषय यह है कि पति के अन्धे होते हुए गन्धारी का जीवन प्रयन्त अन्धा बन कर रहना कहां तक उपयुक्त है। इस की जवाब यह है कि विवाहित जीवन में पति पत्नि का एक दूसरे के लिए सहायक व आसरा अनना ही विवाहित जीवन का धर्म है। क्या कोई व्यक्ति अन्धा बन कर किसी दूसरे अन्धे व्यक्ति का सहारा बन सकता है। इसका उतर है——नहीं। इसके विपरीत यदि गन्धारी ईश्वर द्वारा दी देखने की शक्ति का प्रयोग कर अपने पति, शासन, परिवार व बच्चों को सहायता करती तो हो सकता था जो अवगुण उसके पति और बच्चों में आ गए वह न आते, आखिर एक अच्छी पत्नि का घर को बनाने में बहुत बड़ा हाथ होता है।

सच्चाई यह है कि इसी मानसिकता ने भारत की स्त्री को उपर नहीं उठने दिया और हालत यह हो गई कि स्त्री को सती जैसी अमानविय प्रथा को यह कह कर अपनाने के लिए मजबूर किया गया कि जब पति ही नहीं रहा तो पत्नि को जीने का हक नहीं और यदि पत्नि का देहान्त हो जाए तो पुरूष को 70 साल की आयु में भी दूसरी शादी करने के लिए प्रोतसाहित किया जाता था। भारत की स्त्रीयों को राजा राम मोहन राए, स्वामी दयानन्द और अंगेज शासको का सदैव धन्याबाद करना चाहिए। गर्वनर जनरल विलियम बैंनटिक तो 1829 में बंगाल में कानून बनाकर सती को गैरकानूनी बनाकर सजा देने की घोषणा की।

यहों मैं कुछ शब्द ब्रहमकुमारियों के आयेजन के ढंग पर कहुंगी। बहुत ही शानदार था। फजूल की बातों पर कोई समय व्यर्थ नहीं किया जाता था । वक्ता समय पर अपनी कुर्सी सम्भालकर बोलने प्रारम्भ कर देता था, अपने विषय पर ही रहता है, और दिए गए समय पर बोलकर स्वयं कुर्सी छोड़ देता। दो घटें का प्रोग्राम होता और दो घटे में ही पूरा किया जाता। कोई मन्त्री या स्टेज कन्डकट करने वाला नहीं था।यही कारण था कि करीब 1000 के करीब श्रोता तन्मयता के साथ प्रोग्राम का आनन्द उठाते। कोइ बीच में जाना चाहे जा सकता था। उसे उसके प्रशाद का पैक्ट देकर बिदा कर दिया जाता ।